आधुनिक राजनीतिक चिंतक

1. मैकियावेली (1469-1527) ईस्वी

आधुनिक युग की शुरुआत - प्रमुख बिंदु

- कृषिदास व सौदागर अब सामंती बंधनों व दायित्वों से नहीं बंधा था
- मनुष्य ने व्यक्ति के रूप में अपने पृथक अस्तित्व को पहचाना
- व्यक्ति का राजनीतिक जीवन 'रोमन साम्राज्य' के विस्तृत जाल से निकलकर 'राष्ट्र-राज्य' की छत्रछाया में आ गया।
- अब व्यक्ति की धार्मिक रूढ़ियों में पहले जैसी आस्था नहीं रही।
- विज्ञान की उन्नति ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया जिससे नई सभ्यता और नई सामाजिक - आर्थिक - राजनीतिक संस्थाओं का विकास हुआ।

आधुनिक यूरोप का राजनीतिक-चिंतन सोलहवीं शताब्दी से शुरू होता है इसके विकास में 'पुनर्जागरण' और 'धर्म-सुधार' का विशेष हाथ रहा है।

Note

- मार्टिन लूथर (1483-1546) को धर्म-सुधार के उन्नायक के नाते आरंभिक राजनीति-विचारों में रखा जाता है।
- 16वीं शताब्दी के इस महान धार्मिक आंदोलन से ईसाई धर्म की 'प्रोटेस्टेंट' शाखा का जन्म हुआ। शाखा के प्रवर्तक जर्मन धर्मशास्त्रवेत्ता मार्टिन लूथर ने तर्क दिया — "मोक्ष का साधन केवल आस्था और धर्मग्रंथों का पालन है व्यक्ति अपनी तर्कबुद्धि से धर्मग्रंथों की व्याख्या कर सकता है। अतः सत्य या ईश्वर के साक्षात्कार के लिए किसी पुरोहित या चर्च की शरण में जाने की जरूरत नहीं है"

- तत्कालीन विचारकों का ध्यान अलौकिक और मध्यात्मिक समस्याओं से हटकर सांसारिक एवं मानवीय समस्याओं की ओर खिंच रहा था
- इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी में सुदृढ़ एवं धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र-राज्यों का आविर्भाव हो चुका था, परंतु मैकियावेली की जन्मभूमि इटली की स्थिति चिंताजनक थी।

मैकियावेली द्वारा उपयुक्त-शासन प्रणाली की तलाश करना

→ प्रसिद्ध ग्रंथ → 'डिस्कोर्सेज ऑन लिवी' (लिवी पर वार्ताएं)
→ 'प्रिंस' (नृपति)

- मैकियावेली ने दोनों ग्रंथों के माध्यम से यह सुझाव दिया कि किसी देश के लिए उपयुक्त शासन-प्रणाली का निर्णय करते समय वहां के लोगों के चरित्र को ध्यान में रखना चाहिए
- 'डिस्कोर्सेज ऑन लिवी' के अंतर्गत उसने मान्यता रखी कि जिस देश के लोग सच्चरित्र हों, उसके लिए गणतंत्र (Republic) उपयुक्त होगा क्योंकि वही सर्वोत्तम शासन प्रणाली है। परंतु जिस देश के लोग नितांत स्वार्थी, लालची और धूर्त हों, उन्हें वश में रखने के लिए 'राजतंत्र' (monarchy) का सहारा लेना चाहिए।
- 'प्रिंस' के अंतर्गत उसने उन सब युक्तियों का विवरण दिया जो राजतंत्र के अंतर्गत कुशल शासक को अपनानी चाहिए।

शासन-प्रणाली

आदर्श रूप	व्यवहारिक रूप
↓	↓
गणतंत्र	राजतंत्र
↓	↓
सच्चरित्र लोगों के लिए उपयुक्त	भ्रष्ट लोगों के लिए उपयुक्त

Note → पुनर्जागरण के मुख्य प्रतिनिधि और राष्ट्र-राज्य के सिद्धांत के प्रवर्तक के नाते निकोलो मेकियावेली को पहला आधुनिक राजनीतिक विचारक माना जाता है।

ऐतिहासिक संदर्भ

⇒ पुनर्जागरण का उभाव – मेकियावेली को 'पुनर्जागरण की संतान' कहा जाता है

- पुनर्जागरण चौदहवीं शताब्दी से इटली में शुरू हुआ और बाद में फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और उत्तरी यूरोप तक फैल गया।
- इसके तहत कला और साहित्य के क्षेत्र में चर्च के एकाधिकार का अंत हो गया। इसने मनुष्य की जीवन दृष्टि को एकदम बदल दिया।
- अनेक घटनाएं भी इसके साथ जुड़ गईं— जैसे कस्तुनतुनिया का पतन (1453), छापेखाने का आविष्कार (1455) और अमरीका की खोज (1492)
- नए विचारों की स्वीकृति का कारण → नये सौदागर-वर्ग का उदय जिसने आर्थिक मामलों में 'व्यक्तिवाद' को बढ़ावा दिया।
- कला अब धार्मिक शिक्षाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही बल्कि मानवीय संवेदनाओं के लिए अपार रस का स्रोत बन गई।
- पुनर्जागरण ने धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया परिणामस्वरूप मनुष्य की दिलचस्पी परलोक की कल्पनाओं से हटकर इस लोक पर केंद्रित हो गई।
- मेकियावली ने इस नई चेतना को राजनीतिक चिंतन के रूप में ढाल दिया।

→ मेकियावेली ने राजनीति को तत्वमीमांसा और धर्ममीमांसा के प्रतिमानों से मुक्त करके ऐतिहासिक एवं यथार्थवादी आधार प्रदान किया।

→ परंतु उसके चिंतन में अपने देश व काल की परिस्थितियों की छाप गहरी है।

अर्थात जब कोई देश तत्कालीन इटली की तरह आंतरिक अव्यवस्था और बाह्य असुरक्षा से घिरा हो और वहां के नागरिक स्वार्थ और लोभ के पीछे पागल हों, तब मेकियावेली के सुझाव हमारा मार्गदर्शन करने में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होंगे। उनमें जीवन के शाश्वत मूल्यों या राजनीति के उदात्त पक्ष की तलाश करना बेकार होगा।

→ मेकियावेली राजनीति को 'शक्ति के उपार्जन, परिरक्षण और प्रसार' की विधि मानता है।

मेकियावेली पहला आधुनिक विचारक

→ राजनीति चिंतन के इतिहास में मेकियावेली की प्रसिद्ध कृति 'प्रिंस' को राजनीति-सिद्धांत की प्रथम आधुनिक कृति माना जाता है

→ मेकियावेली ने मध्ययुगीन चिंतन पर पदार्पण करके राजनीतिक विचारों के इतिहास को आधुनिक युग की देहरी पर लाकर खड़ा कर दिया।

→ मेकियावेली की 'आधुनिकता' का सबसे प्रमुख लक्षण है— ऐतिहासिक विधि का प्रयोग।
उसने सर्वप्रथम ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर अपनी धारणाओं का निर्माण किया और अपनी मान्यताओं को व्यवहारिक अनुभव के सहारे सिद्ध किया।

→ उसके अनुसार अतीत के इतिहास को परखने से ही हमें वर्तमान और भविष्य की समस्याओं की कुंजी मिल सकती है।

Note → (ऐतिहासिक विधि की नींव अरस्तू (158 संविधान इतिहास) ने बहुत पहले रख दी थी।

Note → मेकियावेली की विधि, अरस्तू की विधि से एक दृष्टि में भिन्न थी वो है—

अरस्तू के राजनीति चिंतन में नीतिशास्त्र की प्रधानता थी जबकि मेकियावेली ने राजनीति को नीतिशास्त्र से बिल्कुल अलग कर दिया।

मेकियावेली को आधुनिक राजनीति-सिद्धांत का जनक मानने का दूसरा कारण है — राष्ट्र-राज्य का विचार।

→ इटली को एकीकरण की प्रेरणा देने और उसकी नई पहचान स्थापित करने के उद्देश्य से मेकियावेली ने 'एक राष्ट्र, एक राज्य' का सिद्धांत रखा।

क्योंकि उस समय इटली के पांच प्रमुख राज्य थे जो क्षेत्राधिकार के प्रश्न पर निरंतर संघर्षरत थे।

अपने देश को अव्यवस्था और असुरक्षा की दुःखद स्थिति से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य हेतु राष्ट्र-राज्य का सिद्धांत दिया

→
1. नेपल्स का राजतंत्र
2. रोमन-कैथोलिक चर्च क्षेत्र
3. मिलान का डयूक-राज्य
4. फ्लोरेंस
5. वेनिस के गणराज्य

राजनीति और नीतिशास्त्र का अलगाव

↳ शासक को साधारणतः नैतिकता के बंधनों से मुक्त रहकर 'राज्य के परिरक्षण' पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यदि उसका साध्य इतना ऊंचा होगा तो वह जिस भी तरह के साधनों का प्रयोग करेगा, लोग उनका अनुमोदन कर देंगे।

↳ मेकियावेली ने राजनीति को नीतिशास्त्र से पृथक करके अपने विचारों को यथार्थवाद की आधार-शिला पर खड़ा किया।

↳ अतः मेकियावेली पहला ऐसा विचारक था जिसने राज्य को शक्ति के संगठन के रूप में देखा और राजनीतिशास्त्र को धर्ममीमांसा, और तत्वमीमांसा के आश्रित की स्थिति से उबारकर एक स्वायत्त विषय का रूप दिया।

मेकियावेली का राज्यशिल्प

↳ 'डिस्कोर्सेज on लिवी' में → गणतंत्रीय प्रणाली को उत्तम बताया।
'प्रिंस' → में पूर्णसत्तावाद को उपयुक्त बताया।

उसने कहा राजनीति का उद्देश्य सुदृढ़ शासन-व्यवस्था स्थापित करना है। जब लोगों में सद्गुण का नितांत अभाव हो तब नृपति को सद्गुण का परिचय देना चाहिए। परंतु वहां —

"राष्ट्र की एकता और अखंडता खतरे में हो, वहां उसे सारे नैतिक आदर्शों को परे रखकर राष्ट्र के हित की रक्षा करनी चाहिए।

- जब तक शासक लोगों के मन में दंड का भय पैदा नहीं करता तब तक लोग मिल-जुलकर रहने या काम करने को तैयार नहीं होते।
- ~~उनने~~ भ्रष्ट लोगों को शासन के सूत्र में बांधने के लिए मैकियावेली ने प्रबुद्ध 'नृशंसतंत्र' का समर्थन किया है।
- इसके अनुसार शासक को शरीर से शेर की तरह ताकतवर व दिमाग से लोमड़ी की तरह धूर्त होना चाहिए।

अतः मैकियावेली के चिंतन का अर्थ है — राज्य की स्थापना के लिए बल की जरूरत होती है। परंतु उसे कायम रखने के लिए छल की जरूरत होती है

मैकियावेली शक्ति पर विचार →

- शक्ति द्वारा विपरीत परिस्थितियां भी नियंत्रित की जा सकती है।
- शक्ति बढ़ाने के लिए 'बल का प्रयोग' अंतिम विकल्प होना चाहिए।
- हिंसा का प्रयोग शीघ्रता से करना चाहिए
- मैकियावेली ने किसी भी साधन का प्रयोग करके शक्ति अर्जित करने का समर्थन किया।
- 'शक्ति अर्जन ही राजनीति' का मूल उद्देश्य है।

Note → 'The Art of war' नामक अपनी कृति में मैकियावेली ने 'नागरिक सेना' निर्माण का समर्थन किया

Note → 'सीजर बोर्जिया' मैकियावेली का आदर्श शासक था।

समालोचना (Criticism)

(1) ↳ मैकियावेली ने जिस तरह राजनीति को नीतिशास्त्र से पृथक किया वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में एक दुर्भाग्यपूर्ण मोड़ था
ex:- दो महायुद्ध, हिटलर व मुसोलिनी द्वारा राजनीतिक महत्वकांक्षाओं की पूर्ति हेतु मानव जाति का वंशसम संहार।

(2) ↳ ऐतिहासिक विधि का प्रयोग करते समय वह वैज्ञानिक पद्धति का सही-सही निर्वाह नहीं कर पाया
क्योंकि- उसने अपने निष्कर्ष ~~अनुभ~~ अनुभवमूलक पद्धति / विधि से निकाले और उनकी पुष्टि के लिए ऐतिहासिक संदर्भों का प्रयोग किया

(3) ↳ उसने 'प्रभुसत्ता की अवधारणा' प्रस्तुत नहीं की जबकि "प्रभुसत्ता की परिभाषा, प्रभुसत्ता की मर्यादाएं, प्रभुसत्ता के पक्ष और विपक्ष में दी जाने वाली युक्तियां, राजनीतिक दायित्व और वैयक्तिक स्वतंत्रता में सामंजस्य की समस्या ऐसे विचार हैं जो आधुनिक राजनीतिक-चिंतन के आधार तत्व हैं परंतु इनके कोई संकेत मैकियावेली की रचनाओं में नहीं खोजे जा सकते।
* अतः हम मैकियावेली को 'पहला आधुनिक राजनीति-विचारक' तो मान सकते हैं परंतु उसे 'आधुनिक राजनीतिक चिंतन का जनक' मानना युक्तियुक्त नहीं होगा।" *

(4) ↳ उत्तम लक्ष्यों की सिद्धि के लिए अनैतिक साधनों का प्रयोग एक खतरनाक रास्ता है। यह तथ्य केवल भ्रष्ट लोगों पर शासन करने को भला सीखाता है लोगों के चरित्र निर्माण करने में यह सहायक नहीं इसलिए मैकियावेली को 'शैतान का शागिर्द' और 'तानाशाहों का उस्ताद' कहा जाता है।

(5) ↳ मैकियावेली का ध्येय 'शासन की कला' का वर्णन करना था 'राज्य के सिद्धांत' का निरूपण करना नहीं।

अतः मैकियावेली का दर्शन अधूरा है। और जब अधूरे ज्ञान का सहारा

लिया जाता है तो वह खतरनाक सिद्ध होता है। उसके विचार अव्यवस्था और आंतरिक संघर्ष से पीड़ित देश के तात्कालिक उपचार के लिए उपयुक्त हो सकते है ~~सदा~~ - सदा-सर्वदा के लिए नहीं।

अतः यदि ~~वि~~ वर्तमान विश्व को अपने अभिशापों से मुक्ति का मार्ग ढूंढना है तो उसे महर्षि टॉल्स्टाय और महात्मा गांधी से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए, मेकियावेली से नहीं।